an>

Title: Need to allocate funds for sewerage scheme in Jodhpur city of Rajasthan.

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत (जोधपुर) : सभापति महोदय, धन्यवाद। मैं दो दिन पहले इस सदन में सुदूर पाकिस्तान के बॉर्डर पर रहने वाले अपने लोगों के घर में अंधेरे को मिटाने के लिए जब बात कर रहा था तो मेरे सामने बैठे लोग अपनी महत्वकांक्षा को लेकर इतनी जोर से शोर मचा रहे थे कि मुझे इस सदन में इतनी ऊंची आवाज में बोलना पड़ा जो शायद सदन की मार्यादा के खिलाफ था। मैं इस सदन और आसन दोनों से क्षमा चाहता हूं।

माननीय सभापति महोदय, छोटे शहरों और मध्यम शहरों के ढांचागत परियोजना के विकास के लिए वर्ष 2005 में भारत की सरकार ने एक परियोजना आरंभ की थी, उस योजना के माध्यम से छोटे-छोटे शहरों में सीवर और पेय जल की व्यवस्था करने का प्रावधान किया गया था। जोधपुर शहर, जहां से मैं चुन कर आया हूं, उस शहर में भी सीवरेज की तंत्र को सुधारने के लिए इस परियोजना के तहत 607 करोड़ रुपए का, राजस्थान की सरकार ने अपनी तरफ से जो वहां समिति बनी हुई है, उस वैधानिक समिति के माध्यम से केन्द्र की सरकार को नवम्बर-2013 में एक परियोजना बना कर प्रेषित की थी। जिस परियोजना को दिसम्बर में भारत की सरकार ने अनुमोदित कर दिया था और उस परियोजना में, क्योंकि इस योजना में 80 प्रतिशत अनुदान केन्द्र की सरकार देती है, 10 प्रतिशत अनुदान राज्य सरकार को देना होता है और शेष बचा हुआ 10 प्रतिशत हिस्सा, स्थानीय निकाय को अपने माध्यम से जुटाना होता है, जोधपुर का स्थानीय निकाय अपने स्तर पर अपने फंड का एलोकैशन कर चुका है। राज्य की सरकार ने भी अपना फंड दे दिया है। ...(व्यवधान)

माननीय सभापति : आपकी मांग क्या है?

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : केन्द्र की सरकार का जो स्वीकृत पैसा है, मैं आपके माध्यम से सरकार और सदन का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि केन्द्र की सरकार की जो हिस्सा राशि है उसके प्रथम चरण का 184 करोड़ रुपया स्वीकृत हो चुका है, वह शीघ्र दिलाया जाए ताकि मेरे शहर का सीवर तंत्र और शहर का जो वेस्ट वाटर निकास का जो तंत्र है, वह ठीक किया जा सके।

भारत सरकार की भावना है कि निर्मल भारत का जो अभियान चलाया गया है उस भावना के अनुरूप देश के छोटे-छोटे शहरों में काम हो सके। धन्यवाद।

माननीय सभापति : श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत जी द्वारा शून्य काल में उठाए गए विषय के साथ

श्री पी.पी.चौधरी अपने-आप को संबद्ध करते हैं।